Class. B.Com I
Subject. BMC
Paper. I (S/G)
Topic - Nature of management
Lecture - 33
By Dr C P Sahu
Marwari College Dar.

प्रबन्ध की प्रकृति :-

(1)

एक प्रबन्धक वैज्ञानिक एवं कलाकार है। विशेष परिस्थिति में प्रबन्ध विज्ञान प्रबन्धकीय कला की मात्रा को कम कर सकता है लेकिन यह कला की आवश्यकता को समाप्त नहीं कर सकता। प्रबन्ध व्यक्तियों का विकास है एवं कार्य कराने की कला है। प्रबन्ध के द्वारा ही किसी संस्था के संबंध में निर्णय लिये जाते हैं तथा नियंत्रण किया जाता है तथा नियंत्रण किया जाता है।

प्रबन्ध की प्रकृति को विभिन्न विद्वानों ने अपना विचार रखा है जिसे हमें निम्न बातों से स्पष्ट कर सकते हैं।—

(1) प्रबन्ध कला के रूप में :- कला निरन्तर अभ्यास तथा अनुभव द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। कला के प्रयोग करने वाले व्यक्ति की योग्यता एवं निपुणता पर निर्भर करता है। इसके द्वारा यह जानना है कि कोई कार्य किस प्रकार किया जा सकता है और उसे वास्तव में उसी प्रकार करना है। इसलिए आवश्यक है कि प्रबन्धक अनुभवी एवं व्यवहार से जाना जा सके। कला एक व्यक्तिगत क्रिया है क्योंकि प्रत्येक कलाकार का कार्य करने का तरीका अलग-अलग होता है।

विशेषताएँ - (1) व्यावहारिक ज्ञान (2) व्यक्तिगत निपुणता (3) सार्थक परिणाम (4) रचनात्मक उद्देश्य (5) अभ्यास द्वारा विकास एवं कला का हस्तान्तरण संभव नहीं।

(2) प्रबन्ध एक विज्ञान के रूप में - विज्ञान, ज्ञान का व्यवस्थित और एक क्रम-बद्ध अध्ययन है जो कारण एवं परिणाम में संबंध स्थापित करता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार किसी विषय को विज्ञान तभी कहा जा सकता है जब वह व्यवस्थित हो, वह तथ्यों के संग्रह, विश्लेषण एवं प्रयोग पर आधारित हो तथा वह सामान्य सत्यों का प्रतिपादन करता हो तथा जिसकी स्वीकृति सार्वभौमिक हो।

प्रबन्ध विज्ञान के द्वारा सीमित क्षेत्रों में परिणामों का पूर्वानुमान करना भी संभव है।

प्रबन्ध एक विज्ञान है लेकिन भौतिकशास्त्र, रसायन शास्त्र गणित इत्यादि प्राकृतिक विज्ञानों के क्षेत्रों में नहीं रखा जा सकता है। प्रबन्धकों को बदलते हुए मूल्यों, नये सामाजिक परिवेश एवं बदली हुई दशाओं में काम करना चाहिए।

विशेषताएँ — (1) विज्ञान व्यवस्थित ज्ञान (2) कारण एवं परिणाम में संबंध (3) विज्ञान का सिद्धान्त प्रयोग पर आधारित (4) व्यवहार की कसौटी पर परखना

प्रबन्ध कला एवं विज्ञान दोनों है :—

Scanned with CamScanner

प्रबन्ध कला एवं विज्ञान दोनों है :—

प्रबन्ध कला एवं विज्ञान का सम्मिश्रण है। कला और विज्ञान दोनों ही प्रबन्ध को पूर्णता देने का कार्य करते हैं इन्हें एक दूसरे के पूरक माना जाता है। प्रबन्धक वैज्ञानिक के रूप में प्रबन्ध के सिद्धान्तों, अवधारणाओं व दर्शन पर निर्भर करता है दूसरी ओर कलाकार के रूप में संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति में सृजनात्मक निर्णय लेते समय स्वयं के अनुभव चातुर्य एवं विवेक से काम लेता है।

इस प्रकार व्यवहार रूप में प्रबन्ध करना एक कला है और इस व्यवहार को श्रेष्ठ बनाने के लिए संगठित व तर्क संगत ज्ञान को आधार बनाना विज्ञान है।

(3) प्रबन्ध एक पेशे के रूप में— आज हम पेशे को उस क्षेत्र के रूप में परिभाषित करते हैं जिसका ज्ञान

भंडार सुपरिभाषित है, जो विद्वतापूर्ण, बौद्धिक तथा संगठित है जहाँ शिक्षा और परीक्षा के बिना संभव नहीं है और जिसका मुख्य उद्देश्य आत्म पारितोषिक प्राप्त करने के बजाय दूसरों की सेवा करना है।

पेशा एक ऐसा आजीविका का साधन है जिसके लिए प्रारम्भिक प्रशिक्षण आवश्यक होता है जिसमें प्रबन्धकीय ज्ञान तथा कार्य कौशल का समन्वय होता है जो केवल व्यक्तिगत स्वार्थ पोषण पर ही आधारित न होकर दूसरों के सेवाभाव पर आधारित होता है।

विशेषताएँ :- (1) व्यवस्थित तथा विशेष संचित ज्ञान का होना (2) शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था (3) पेशे के सदस्यों के लिए एक प्रतिनिधि संस्था का होना (4) सदस्यों के लिए आचार-संहिता (5) सेवा की प्रकृति एवं भाव के अनुसार पारिश्रमिक लेकिन पेशे का उद्देश्य सेवा करना है।

Scanned with CamScanner

इस तरह कह सकते हैं कि पेशे का मूल उद्देश्य सेवा होता है। किसी पेशे की सफलता का सार्थकता का मापन धन-उपार्जन के संदर्भ में न होकर प्रदान की गयी सामाजिक सेवा के संदर्भ में किया जाता है। आज के समय में प्रबन्धकों का दायित्व और भी बढ़ता जा रहा है। (5)

उपर्युक्त प्रबन्ध के प्रकृति के अलावा अन्य प्रकृति भी है — प्रबन्ध एक जन्मजात प्रतिभा के रूप में, सार्वभौमिक के रूप में, सामाजिक दायित्व के रूप में, एक प्रणाली एवं प्रक्रिया के रूप में

प्रक्रिया के निम्न तत्व हैं- नियोजन, संगठन, अभिप्रेरणा, नियुक्ति, निर्देशन एवं नियंत्रण

Scanned with CamScanner

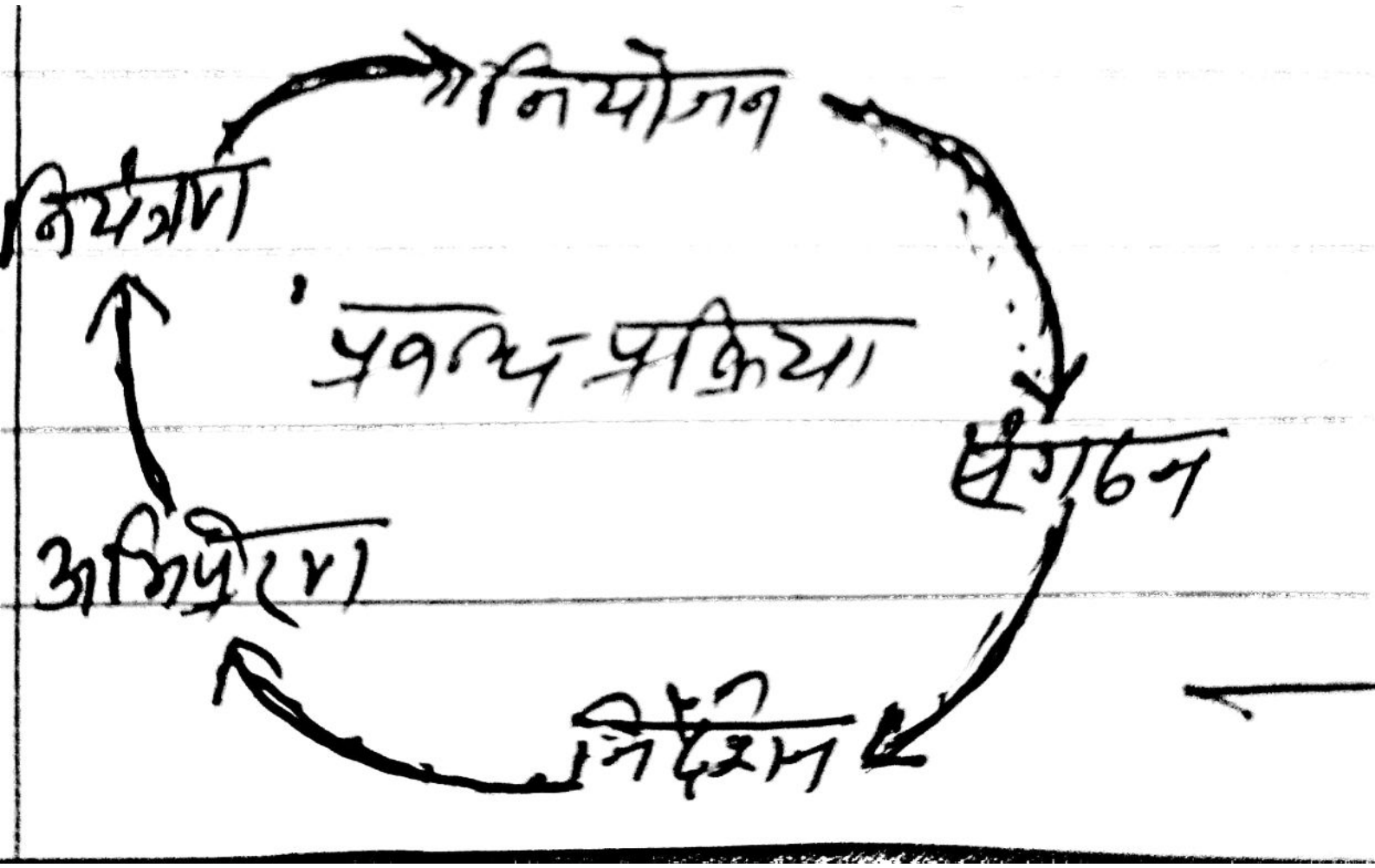

Scanned with CamScanner